तिथि–10 नवम्बर 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-१२०, वर्ष-१३
आश्विन, विक्रमी २०७६ (नवम्बर 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्द्धयामो वचोविदः। सुमृळीको न आ विश॥ –ऋ० १। ६। २१। १

व्याख्यान–हे (सोम) सर्वजगदुत्पादकेश्वर! [(त्वा)] आपको (वचोविदः) शास्त्रविद् [(वयम्)] हम लोग (गीर्भिः) स्तुतिसमूह से (वर्द्धयामः) सर्वोपरि विराजमान मानते हैं। (सुमृडीकः नः आविश) क्योंकि हमको सुष्ठु सुख देनेवाले आप ही हो। सो कृपा करके हमको आप आवेश करो। जिससे हम लोग अविद्यान्धकार से छूट और विद्यासूर्य को प्राप्त होके आनन्दित हों।

सम्पादकीय

श्रीराम मन्दिर से रामराज्य की ओर ...

संसारभर में किसी भी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्र के लिए कुछ ऐतिहासिक महामानव होते आये हैं, जिनके जीवन वृत्तान्त से मर्यादामय मानवीय जीवन मूल्यों को प्रायोगिक धरातल पर मापकर मनुष्य मात्र प्रेरणा लेता है और लेता रहेगा। ऐसे ही महामानस थे- चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के पुत्र, वशिष्ठ और विश्वामित्र जैसे ब्रह्मऋषियों के सर्वश्रेष्ठ शिष्य, वेदवेदांग तत्वज्ञ श्रीराम। जो आर्यावर्त्तीय आर्य संस्कृति, सभ्यता एवं आर्य राष्ट्र की मानवीय मर्यादा के अद्वितीय मापदण्ड थे, हैं और रहेंगे। लाखों वर्ष उपरान्त भी आज तक उन जैसा पितृभक्त, एक पत्नीव्रत, भ्रातृप्रिय, अतुलनीय समाज संघटक एवं प्रजावत्सल महापुरुष कोई दूसरा पढ़ने-सुनने को नहीं मिलता। मध्यकाल में फैले हमारे इस देश में सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, न्यायकारी, अपरिवर्तनीय, अविनाशी परमपिता परमात्मा के अवतार की कपोल कल्पित कथाओं को यदि थोड़े से बुद्धिमान लोगों ने भी एक ओर छोड़कर 'श्रीराम' के संघर्षमय जीवन को यथार्थरूप में जाना और समझा होता तो हमारा यह करोड़ों वर्षों तक अजेय एवं अपराजेय रहने वाला, संसारभर में ज्ञान-विज्ञान से देदीप्यमान रहने वाला राष्ट्र कभी भी गुलाम नहीं रहा होता। और जब गुलामी ही नहीं होती तब 'श्रीराम' के स्मारक मन्दिर का विध्वंस और उसी स्थान पर वहशी, जाहिल, बर्बर, अत्याचारी बाबर के नाम से मस्जिद ??? नहीं कभी नहीं होती।

किन्तु इतिहास के इस दुर्भाग्यपूर्ण कालखण्ड में न तो हम लोग 'श्रीराम' के जीवन से कुछ सीख पाये और न ही अभी तक भी सीखने को तैयार दिखते हैं। 'श्रीराम' के नाम पर अज्ञानान्धकार में फंसी निरीह जनता का बेरहमी से शोषण ही आज के धर्म के धन्धेबाज लोगों का एकमात्र धर्म-कर्म रह गया है, अन्यथा विवेकपूर्वक बुद्धि का प्रयोग किया जाए तो निश्चित रूप से 'श्रीराम' का संघर्षपूर्ण जीवन इस मृतप्राय: हिन्दू कहलाने वाली दीन-हीन जाति को संसारभर के सम्मुख फिर 'आर्य' बनाकर देदीप्यमान सूर्य की तरह खड़ा कर सकता है।

पाठकगणों! मैं बहुधा विचारा करता हूँ कि- श्रीराम और उनके अनुज श्री लक्ष्मण मात्र दो भाई जब भयानक वन में अकेले भटक रहे थे, देवी सीता जी का अपहरण हो चुका था, दोनों भाईयों के पास कुछ न था, न धन, न संसाधन, न कोई चल-अचल सम्पत्ति और न ही किसी प्रकार के स्वर्णाभूषण, तब प्रश्न उठना स्वाभाविक है-कि किसके बल पर श्रीराम एवं श्री लक्ष्मण ने सहस्रों योद्धाओं की सेना खड़ी की होगी? क्या दिया होगा उन योद्धाओं को? किसके वशीभूत होकर जुटे होंगे यह वनों, पर्वतों, गुफाओं में रहने वाले निर्द्वन्द जीवन यापन करने वाले तपस्वीजन? तब सम्मुख आता है श्रीराम का संगठन कौशल, जिसमें श्रीराम ने प्रयोग किया होगा, अपने द्वारा अधीत विद्या का, विचार का और

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

बाहुबल के साथ-साथ अपने साथ लाए गये एकमात्र शस्त्र बल का। क्या यह कम विचारणीय है कि-श्रीराम और श्री लक्ष्मण अयोध्या से अपने साथ शरीर पर धारण किये वस्त्रों के अतिरिक्त यदि कुछ साथ लेकर चले थे, तो वह थे उनके दिव्य शस्त्र। किन्तु! एक हजार वर्षों के सुदीर्घ गुलामी के भयावह और भयानक कालखण्ड में हम 'श्रीराम' के वंशजों पर ऐसे-ऐसे प्रहार हुए कि- हम अपने शस्त्रों-अस्त्रों से भी विहीन होकर दीन-हीन-पराधीन जीवन यापन के आदि हो गये, परिणामस्वरूप आज हम और हमारी अस्मिता एवं हमारा अस्तित्व भी खतरे में है। इसका इससे प्रत्यक्ष उदाहरण और क्या हो सकता है कि हमारा देश, देश में हमारे हित का दम्भ भरने वाली हमारी ही बनायी सरकार और तब भी हम लगभग पाँच सौ वर्षों बाद माननीय उच्चतम न्यायालय के तर्कपूर्वक, तथ्यपूर्वक किये निर्णय से मुक्त हुई 'श्रीराम जन्मभूमि' की प्रसन्नता भी खुलकर व्यक्त नहीं कर सकते? उत्साह और उमंग के साथ उत्सव नहीं मना सकते? यहाँ तक कि हमारे माननीय उच्चतम न्यायालय को उस आक्रान्ता के अमानवीय, अवांछित आक्रमण के बदले में भी पाँच एकड़ भूमि पर मस्जिद बनवाने का आश्वासन देना पड़ता है?

पाठकगणों! श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मन्दिर तो बन ही जाएगा, किन्तु श्रीराम का जीवन जन-जन के अन्त:करण में जब तक स्थापित न होगा, जब तक श्रीराम के देश में रावणों का वर्चस्व और म्लेच्छों का आतंक होगा, जब तक श्रीराम के शास्त्रज्ञान और शस्त्रबल से ओत-प्रोत युवक घर-घर में तैयार न होंगे, श्रीराम की आर्यमर्यादा जब तक मानवीय जीवन में स्थापित न होगी तब तक हमारा भी लक्ष्य पूरा न होगा। और न ही लगभग पाँच सौ वर्षों के उपरान्त मुक्त हुई 'श्रीराम जन्मभूमि' ही सुरक्षित रह पायेगी।

अत: आवश्यकता सन्तुष्ट होने की नहीं, आगे बढ़ने की है, जन-जन के मन में आर्य मर्यादा स्थापित करने की है। आइए! बढ़ें, श्रीराम जन्मभूमि से रामराज्य की ओर ....

मानवीयता का संकट और समाधान

- आचार्य डॉ महेशचन्द्र आर्य, भिवानी, हरियाणा

वर्तमान में सारा संसार जिसमें समस्त प्राणीजगत व प्रकृति समाहित हैं, अनेक प्रकार की समस्याओं और संकटों से जूझ रहा है। हमारा देश भी इनसे अछूता नहीं है। इन समस्याओं में पर्यावरण प्रदूषण, बेरोजगारी बढती बीमारियाँ, जलाभाव, जनसंख्या विस्फोट, अन्याय, आर्थिक विषमताएँ, आतंकवाद, हिंसा, बलात्कार, व्याभिचार, अन्याय, अशिक्षा, कुपोषण, मतांतरण, असुरक्षा के अलावा ऐसी ही सैकड़ों प्रकार की छोटी-बड़ी समस्याएँ समाहित हैं, जिनसे मनुष्य ही नहीं अपितु समस्त प्राणीजगत त्रस्त है। इनसे कैसे निजात पाई जाए इसके लिए अनेक बुद्धिजीवी, शिक्षाविद, पर्यावरणविद्, वैज्ञानिक, प्रशासक, मन्त्री, प्रधानमन्त्री सभी चिन्तित हैं व इन्हें दूर करने में प्रयासरत होने का दम्भ भरते हैं। लेकिन सैकड़ों वर्षों से ये समस्याएँ दूर होने के स्थान पर और विकराल रूप धारण करती जा रही हैं अर्थात् मर्ज बढता गया ज्यों-ज्यों दवा की। क्या इन सब समस्याओं से संसार को कभी मुक्ति मिल पाएगी? क्या इन समस्याओं का कोई स्थाई समाधान हैं? बुद्धिमान लोगों को इस पर अवश्य चिंतन करना ही चाहिए।

किसी भी समस्या को दूर करने के लिए उसके मूल अर्थात् कारण को जानना चाहिए क्योंकि ये एक मूलभूत सिद्धान्त है कि समस्त संसार कारण कार्य के आधार पर चल रहा है। कारण को हटाने से कार्य स्वत: नष्ट हो जाता है **'कारणाऽभावात्कार्याऽभाव:'**। आइए हाल की में घटित कुछ ज्वलन्त समस्याओं का विश्लेषण करके कारणों और उनके समाधान जानने का प्रयास करेंगे।

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष के इस काल में पिछले कुछ दिनों जहरीली वायु ने पूरे उत्तर भारत को अपने घुटन भरे आवरण से ढक लिया। प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से लेकर सोशल मीडिया पर विभिन्न पार्टियों, सरकारों द्वारा एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चला। कथित रूप से किसान द्वारा जलाई जाने वाले फसल अवशेष से प्रदूषण होना सिद्ध करने के प्रयास हुए तो कहीं अत्याधिक औद्योगिकरण, वाहनों की बेतहासा वृद्धि, दीवाली के पटाखों को इसका कारण बताया गया। विभिन्न इंटरनेट आंकड़ों के अनुसार कृषि कार्यों से होने वाले प्रदूषण का हिस्सा मात्र 8 प्रतिशत है। खैर एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप में समस्या का समाधान नहीं है। अपितु समाधान तो समस्या के मूल कारण को जानकर उसे अन्तहीन मानवीय लिप्साओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक और अन्धाधुंध दोहन व उसकी प्रतिपूर्ति की कोई व्यवस्था ना होना है। प्रकृति की समस्त क्रियाएँ सृष्टि-कर्ता अर्थात् ईश्वर ने एक नियमबद्ध चक्र के रूप में बाँध रखी हैं जिसे आज का विज्ञान भी स्वीकार कर रहा है और जब भी असंतुलित मानवीय क्रियाएँ उस चक्र को बाधित करती हैं तब यही उपयोगी प्रकृति व प्राकृतिक संसाधन दु:खकारी हो जाते हैं। इसका समाधान हमारी संस्कृति में अभिन्न रूप से विद्यमान रहा है जो जीवन में समस्त प्रकार के संसाधनों के संतुलित उपयोग उपभोग को ही पोषित नहीं करती अपितु उपयोगी संसाधनों की प्रतिपूर्ति का भी व्यवहार सिखाती है। हमारी संस्कृति भोग से नहीं रोकती परन्तु उसे सीमित अवश्य करती है अर्थात् **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'** के सूत्र को धारण किए हुए हैं जो सहअस्तित्व को स्वीकार करके, समस्त प्राकृतिक संसाधनों को प्राणीमात्र की साझी सम्पत्ति मानकर उपयोग-उपभोग को बल प्रदान करती है। लम्बी गुलामी और मैकाले की आचरणहीन शिक्षा ने हमारी परम्पराओं के प्रति हमारे भीतर तिरस्कार की भावना भरकर 'survival of the fittest' की अमानवीय अवधारणा को समाहित कर दिया। हम तो सहअस्तित्व स्वीकार करके श्वास-प्रश्वास से दूषित वायु को भी पुन: शुद्ध करने के लिए यज्ञ व याज्ञिक कार्यों को धारण करते थे। समय की आवश्यकता पुन: हमें अपनी संस्कृति के मूल को पकड़ने का आह्वान कर रही है।

दूसरा ज्वलन्त मुद्दा कार पार्किंग को लेकर शुरु हुई जन रक्षकों (पुलिस) और न्याय रक्षकों (वकील) की बहस से प्रारम्भ होकर मारपीट, गाली-गलौच, हिंसा के तांडव, गोलीबारी, धरनों, प्रदर्शनों के रूप में परिणत हुआ। जिन पर जनता की रक्षा का भार व न्याय दिलाने का दायित्व है वे स्वयं भक्षक व कानून के हत्यारे बन गए। दोनों वर्गों ने एक-दूसरे की मानहानि का कोई मौका नहीं छोड़ा जिसकी गूंज देश-विदेश तक पहुँची। वैसे गाहे-बगाहे इन दोनों विभागों पर न्याय को अन्याय और सत्य को असत्य करने के आरोप लगते रहे हैं। परन्तु क्या प्रशासन व समाज के दोनों विभाग ही भ्रष्टाचार, अव्यवस्था से ग्रस्त हैं? क्या अन्य सब विभाग आचारवान व व्यवस्थित हैं? निश्चय ही नहीं! यहाँ तो **'हर साख पर उल्लू बैठा है'** की कहावत चरितार्थ हो रही है अर्थात् शासन-प्रशासन की, समाज की जिस भी भित्ती को छूएंगे वो भरभराकर गिर जाएगी, यहाँ तक कि प्राईवेट सेक्टर

शेष अगले पृष्ठ पर ...

पिछले पृष्ठ का शेष...

भी इससे अछूता नहीं है। प्रश्न है कि इन सब विभागों, संस्थाओं में मानवीय संसाधन कहाँ से आ रहा है। निश्चित रूप से इसी समाज से और इसको निर्माण और संसाधन के रूप तैयार करती है वर्तमान शिक्षा प्रणाली। शिक्षा के दो रूप हैं एक औपचारिक जो स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, कॉन्वेन्ट, कोचिंग संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्र से प्राप्त होती है जिसमें आचरण का कोई स्थान नहीं है, दूसरी अनौपचारिक जो माता-पिता, परिवार, मित्रों, सम्बन्धियों से मिलती है जो मूल्यहीन होती जा रही है। एक बालक/बालिका इसी समाज में बचपन बिताते हैं और फिर आचरणविहीन और रटन्त पद्धति पर आधारित मैकाले शिक्षा पद्धति के हवाले कर दिए जाते हैं जो व्यक्ति को 'survival of the fittest' की क्रूर अमानवीय, पाश्विक प्रवृति की तरफ बाँट देती है जिसके परिणाम हैं अनगिनत समस्याएँ, दु:ख, संघर्ष, उद्देश्यहीन एकांगी जीवन, भौतिकवादी धन लिप्सा युक्त मानव।

वास्तव में मूल समस्या मानव व अव्यवस्थित तन्त्र में है। सैकड़ों पीढियों से मानव को मानवता से युक्त करने की योजनाएँ नदारद हैं। ऐसी स्थिति में ये समस्याएँ तो रहेंगी ही और उनके समाधान के नाम पर होगी खानापूर्ति, लीपापोती। दुर्भाग्य तो इस से भी बढ़कर है कि निकट भविष्य में इस प्रकार की किसी योजना के बनने के लक्षण भी अदृष्ट हैं। जब समस्या मानव में है तो समाधान भी मानव को केन्द्र में रखकर ही सम्भव है क्योंकि जब तक समस्या के मूल पर प्रहार नहीं होगा तब तक समस्याएँ पुन: पुन: रूप बदल-बदल कर बलवती होती रहेंगी।

इसके समाधान के लिए आवश्यक है आचरणयुक्त शिक्षा व्यवस्था, सीधे अर्थों से कहें तो वही प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति जो ऋषि-मुनियों, राम, कृष्ण, हनुमान, चाणक्य आदि पैदा करती थी। यही वो शिक्षा पद्धति है जो अपने प्रांगण में बालक को भावी जीवन में केवल प्रतियोगिता हेतु तैयार न करके, अपने से कमजोर, अल्प सामर्थ्यशाली को भी सहयोग व साथ लेकर चलने को अग्रसर करती है, जो 'survival of the fittest' नहीं अपितु 'survival of the weakest' की भावना को प्रबल करती है, जो 'live and let live' अर्थात् जीओ और जीने दो के भाव से परिपूर्ण है, जो मनुष्य को **'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'** का पाठ पढ़ाती है, जो उपयोग के लिए **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'** का मन्त्र दे, जो जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में **'सत्यमेव जयति नानृतम्'** की भावना को प्रबल करती है, जो समस्त प्राणीजगत को **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना से भर देती है।

आर्यों, आर्याओं निश्चित ही निकट भविष्य में इस समाधान का कार्यान्वयन संभव नहीं लगता। क्या यही सोचकर हम हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएँ? क्या सब कुछ नियति के हाथों सौंप दें? क्या सब कुछ वर्तमान तन्त्र पर छोड़ दें? आर्य आशावादी होता है और इन्हीं आशाओं पर सवार होकर प्रबल पुरुषार्थ से उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। आर्यों, आर्याओं पुरुषार्थ से ही आशाएँ बलवती होती हैं। हमें इस देश के कोटि-कोटि जन को इन्हीं आशाओं की प्राप्ति हेतु आन्दोलित करना है, समाज के हर वर्ग को इस हेतु आन्दोलित करना है, वर्तमान मे दो दिवसीय आर्य प्रशिक्षण सत्रों (लघु गुरुकुल) में जन-जन को बैठाकर, विद्यायुक्त करना है। जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी **'अहम् भूतले अस्मि'** की भावना से आर्ष विद्या, आर्ष सिद्धान्तों को जन-जन में व्यापक करना है। **'चरैवेति-चरैवेति'** का सूत्र पकड़कर और ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास करके आगे बढ़ना ही होगा। इसी में समस्त मानवीय समस्याओं का समाधान निहित है। हमें तारनहार बनना ही होगा। इसी में समस्त कल्याण है।

आयुर्वेदिक मुर्गी और अंडे-वैदिक संस्कृति पर हमला

- कुलदीप आर्य, गांव नगूरां, जींद

आपके जीवन में कभी किसी ऐसे व्यक्ति से भेंट अवश्य हुई होगी जो अंडे खाता हो, मांस खाता हो। निश्चित तौर पर आपकी उस व्यक्ति से इस विषय पर चर्चा भी हुई होगी कि मांस-अंडा मनुष्य का भोजन नहीं है, ये मांसाहार हमारा भोजन नहीं है आदि आदि ।

लेकिन अगर सामने वाला व्यक्ति आपसे कुतर्क करे कि मैं जो मांस खाता हूं या जो अंडे खाता हूं वो मांसाहार नहीं हैं अपितु आयुर्वेदिक अंडे हैं! आश्चर्य में पड़ गए ना आयुर्वेदिक अंडे का नाम सुनकर। पहले कभी नही सुने होंगे देखना तो दूर की बात है ।

आइये! आपको एक ऐसी चर्चा बताता हूँ जो कि राज्यसभा में हुई। लगभग 3 माह पूर्व राज्यसभा में राज्यसभा सांसद संजय राउत ने अपना वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने कहा कि मैं महाराष्ट्र के नंदुरबार नाम के एक आदिवासी क्षेत्र में गया हुआ था। वहाँ लोगों द्वारा मुझे खाना दिया गया- मैंने पूछा खाने में क्या है? तो वो बोले- साहब ये मुर्गी है। मैंने कहा- मैं मुर्गी नहीं खाता। उन्होंने कहा- साहब ये वो मुर्गी नहीं है जो आप सोच रहे हो।

ये आयुर्वेदिक मुर्गी है इस मुर्गी को जिस पॉल्ट्री फार्म में रखा जाता है वहाँ इसे खाने के लिए हर्बल दिए जाते है जैसे लौंग, तिल आदि। इसलिए इनसे जो अंडा मिलता है वो भी आयुर्वेदिक होता है ।

आदिवासी क्षेत्र के लोगों से कोई पूछे कि एक भैंस को खल, बिनौले, ज्वार की जगह काजू, किशमिश, बादाम खिलाये जायें और जो भैंस से गोबर मिलेगा क्या वो भी आयुर्वेदिक खाने योग्य होगा ?

दोस्तो! अंडा मुर्गी का अपूर्ण गर्भ है जो खाया नहीं जा सकता। एक अपूर्ण गर्भ को खाना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? आपने कभी नहीं सुना होगा कि आयुर्वेद में अंडा मांस खाने की विधि बताई गई है । संजय राऊत ने बात यहीं तक ही सीमित नहीं रखी। उन्होंने आयुष मंत्रालय की तरफ पासा फेंकते हुए कहा कि ये स्पष्ट किया जाना चाहिए कि ये शाकाहार है या मांसाहार। जिस प्रकार से यह अंडे मांस को आयुर्वेदिक बताकर उस पर शोध करने का दबाव बनाया जा रहा है, ऐसी स्थिति में वो दिन दूर नहीं जब ये लोग इन्हें आयुर्वेद से जोड़ देंगे और आपकी आने वाले एक-दो पीढ़ियों बाद अगर आपके घर में आपके फ्रिज में गाय भैंस का आयुर्वेदिक मांस रखा मिले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। आयुर्वेद के नाम पर मांस आपके खाने में परोसा जाएगा।

वास्तव में आयुर्वेद का ज्ञान मनुष्य को निरोगी बनाने, दीर्घायु होने, सुखी रहने का बोध कराता है, जबकि मांसाहारी भोजन तामसिक प्रवृत्ति, विकार, वासनाएं और अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देता है।

किसी भी राष्ट्र में राजा का कर्त्तव्य होता है कि उस राष्ट्र की संस्कृति की रक्षा करे, राष्ट्र की उन्नति उसकी सभ्यता और संस्कृति पर आधारित होती है। लेकिन जब राजा विमुख हो जाये तो ऐसे में आपको समझना होगा, दूसरों को समझाना होगा। आयुर्वेद में मांसाहार के लिए कोई स्थान नहीं है।

आओ बचाएं अपनी संस्कृति को!

गृहस्थ संबंध : भाग-५

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

दुःख सागर से तरने की नौका वैदिक आचरण ही है। यही उपाय है सभी के लिए, चाहे कोई ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी अथवा सन्यासी क्यों न हो। इसीलिए हमारे ऋषियों ने वेदानुकूल आचरण को ही जीवन पथ बना दिया था, उसी की मर्यादाएँ बाँध दी थी ताकि कोई भी उनका उल्लंघन ना कर सके। पुनरपि प्रजा के धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष की सिद्धि के निमित्त सत्योपदेश करने वाले उपदेष्टाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है, दर्शनकार भी कहते हैं - ''उपदेश्योपदेष्ट्रित्वात् तत्सिद्धि इतरथान्धपरम्परा।'' सत्यापदेशकों के न होने से मर्यादाएँ अन्ध परम्पराओं में बदल जाती हैं। मर्यादाएँ ऐसा उपाय हैं जो हमारी सुगम्यता के लिए दुर्गम पथ पर चलने में हमें सहाय हो सके इसलिए पूर्वजों ने किया था। किन्तु कोई भी मार्ग उचित प्रबन्धन के अभाव में यथोचित बना नहीं रह सकता। निश्चित ही वह टूट-फूट जायेगा, दुर्दशा को प्राप्त होगा ही। विद्या के अभाव में और पीढीयों से चले आ रहे आलस्य-प्रमाद के कारण से हमने ऋषियों का प्रबन्ध तन्त्र भुला दिया है। उनके नियमों के स्थान पर सामान्य मनुष्यों के बनाए नियमों पर विश्वास करने लगे, उन्हीं पर चलने लगे। परिणाम तो दुःख सागर में डूबकर गोते लगाना ही होना था हुवा भी वही जिससे सभी आश्रम अस्त-व्यस्त हो गये। ब्रह्मचर्य घरों में बन्दी बना लिया गया, वानप्रस्थ प्रायः समाप्त हो गया है और सन्यास का इतना अवमूल्यन हो गया कि सामान्य जन की दृष्टि में भिक्षुक और सन्यासी में कोई अन्तर ही नहीं रह गया है। स्वाभविक ही है इन तीनों के भ्रष्ट होने पर गृहस्थ भी कहां बचना था? परिणाम स्वरूप सम्बन्ध विच्छेद जैसा निन्दनीय और भ्रष्ट आचरण समाज में दृष्टिगोचर होने लगा। समाजशास्त्रियों और चिन्तकों को ऐसा लगने लगा कि सम्बन्ध विच्छेद के लिए सनातन धर्मियों को भी नियमों की आवश्यकता है। ऐसे नियम बना भी दिये गये। किन्तु आर्यों संसार कुछ भी क्यों ना करे हमारे लिए तो वेदानुकूल आचरण ही सर्वश्रेष्ठ है वही करणीय है और उसी में हमारी अनुकूलता भी है। सधन्यवाद स्मरण रखना चाहिए ऋषि दयानन्द के प्रयत्न को जिन्होंने उस भूले हुए वैदिक राजमार्ग को हमारे लिए खोल दिया। उन्होंने पुनः चारों आश्रमों की स्थापना के लिए संघर्ष किया जो हम सबके लिए भी कर्तव्य है। हममें से जो जिस आश्रम में है अथवा जिसके योग्य है उसी के आदर्शों की स्थापना और गरिमा वर्धन का कार्य करें।

गृहस्थों को चाहिए कि आदर्श आचरण करके भावी पीढी का मार्ग प्रशस्त करें और स्वयं भी गृहस्थ का आनन्द भोगें। संबन्ध विच्छेद जैसा निन्दनीय आचरण करने का विचार भी मन में न लावें। संबंध विच्छेद के विचार के आने का कारण पत्नी-पति में परस्पर सामंजस्य का न बन पाना ही है चाहे इसका कारण कुछ भी क्यों न हो। सामंजस्य न बन पाने के कई कारणों पर हम पूर्व के लेखों में विचार कर चुके हैं। एक और मुख्य कारण पर इस समय विचार करते हैं। 'धन पर आधिपत्य' यह भी पत्नि-पति और परिवार में उपद्रव का एक कारण है। संसार में बडे-बडे युद्ध धन के कारण से हुए हैं, यह एक छोटी इकाई से लेकर राष्ट्रों के बीच भी युद्ध का कारण है। ऐसे भी दम्पत्ती देखने-सुनने में आते हैं जो जीवन भर साथ रहने के बाद भी इस संबंध में विश्वास नहीं बना पाते। नौकरी से निवृत्त होने पर मिले संचित धन को पति पत्नी को नहीं देना चाहता और पत्नी पति, पुत्र और भाई-बहन आदि को भी धन देकर प्रसन्न नहीं होती। ऐसा भी नहीं है कि यह केवल निर्धन परिवारों में ही होता हो, बडे धनपति परिवारों में भी यह कलह देखने को मिलता है। आधुनिक या पाश्चात्य विचार इस समस्या को स्वतन्त्रता और सशक्तीकरण के नाम पर और उग्र कर रहे हैं। इस कलह का उपाय क्या हो? इस समस्या पर आधुनिक समाजशास्त्री जितना विचार करते हैं उलझते जाते हैं। समाधान बहुत दूर तक नहीं जाते हैं। किन्तु ऋषियों ने वेदरुपी गाय को दुहकर समाधान रुपी दुग्ध प्राप्त किया था। जहाँ वर विश्वास दिलाता है कि मैं वृद्धावस्था तक आपको सुखपूर्वक अपने साथ रखूँगा, तेरे पालन पोषण की जिम्मेदारी मेरी होगी, तुझे सुन्दर वस्त्र और आभूषण आदि से सजधजकर रहना है, तेरे स्वास्थ के हेतु भी उत्तम साधान उपलब्ध कराउँगा, तुझसे किसी प्रकार की कोई चोरी नहीं रखूँगा। वहीं वधु जब लाजाओं को यज्ञकुण्ड में होम कर रही है तीन बार तीन प्रार्थनाएँ करती है **'मे पतिः आयुष्यमानस्तु' 'ज्ञातयः मम एधन्ताम्' 'तव समृद्धिकरणम् मम तुभ्यं च संवननम्'** अर्थात् मेरा पति दीर्घायु हो, मेरा परिवार समृद्ध हो, हे पतिदेव! आपकी समृद्धि मे आपका और मेरा मिलन हो। वधू यह प्रार्थना अपने भाई द्वारा दी गई शमीपत्र युक्त खीलों से यजन करते हुए करती है अर्थात दोनों अपने-अपने धन को एक दूसरे के लिए व्यय करने की प्रतिज्ञा कर एक-दूसरे को आश्वस्त कर रहे हैं। इसी आश्वस्ति और विश्वास से दोनों के बीच यह तेरा धन यह मेरा धन ऐसी भावना ही नहीं रहेगी। और संसार भर में प्रचलित इस उपद्रव का समाधान भी हो जाएगा।

एक और कारण देखने में आता है; लोकापवाद और लोकेषणा की सिद्धि। संसार में कोई मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष यह नहीं चाहता कि लोक में उसका अपवाद या बुराई फैले, विशेष युक्त योगियों को छोडकर अपनी कीर्ति किसे प्रिय नहीं है अर्थात सभी अपनी बडाई से प्रसन्न होते हैं। जहाँ पत्नी-पति एक-दूसरे के गुणों को भी दूसरों के सामने कहने में कंजूसी करते हैं और दोष प्रदर्शन में तत्पर रहते हैं वहाँ सामंजस्य का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। उल्टे छिद्रान्वेषण करने का स्वभाव बन जाता है जिससे छोटी-छोटी त्रुटियाँ भी आपस में विवाद का कारण बनने लगती हैं। जबकि कोई भी मनुष्य संसार में ऐसा नहीं है जिसमें मात्र दोष ही दोष हों गुण न हों, ऐसा भी कोई नहीं है जिसमें गुण ही गुण हों दोष न हों। किन्तु विवाहित दम्पत्ती मित्रता की शपथ ले चुके हैं और मित्र का तो लक्षण ही यह है- **'गुह्यान्निगुह्यति प्रकटिकरोति गुणान्'।** मित्र अपने मित्र के दोष सार्वजनिक कभी नहीं करता केवल गुण ही प्रकट करता है, एकान्त में प्रेम पूर्वक दोषों को छुडाने का प्रयास करता है।

क्रमशः .....

आज का प्रश्न

- आचार्य धर्मपाल

प्रश्न – 'क्या मोक्ष के अभिलाषी को राजनीति करनी चाहिए' ?

उत्तर– राजनीति कहते किसको हैं? राजृ – दीप्तौ और नी नयति धातु से निष्पन्न होता है राजनीति शब्द। राजृ का अर्थ होता है चमक। प्रकाश की ओर ले जाने के साधन को राजनीति कहते हैं। सबसे बड़ा प्रकाश तो ईश्वर है, मोक्ष है जो उस तरफ बढ़ाने का साधन है। यह अलग बात है कि हम राजनीति को साधन मानते हैं या लक्ष्य मानते हैं। लक्ष्य मानेंगे तो गहरे गर्त में डूब मरेंगे और यदि साधन मानेंगे तो मोक्ष प्राप्ति का यह भी एक साधन है। रामायण और महाभारत हमारे दो ग्रंथ ऐसे हैं– जो इन दो ग्रंथों को केवल धार्मिक ग्रंथ कहते हैं वह भूल करते हैं। वास्तव में यह दोनों ग्रंथ राजनैतिक ग्रंथ हैं जो हमें राजनीति का साधन सिखाते हुए मोक्ष गामी बनाते हैं।

क्या परमात्मा भी राजनीति करता है? हाँ, परमात्मा भी एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ है। बस इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि जो जो गुण राजा के रूप में ईश्वर में हैं वही वही गुण एक राजा के होने चाहिएं। राजा का सबसे बड़ा गुण होता है पक्षपात रहित न्याय करना और यह भी ईश्वर का गुण है। तभी हम राजनीति को साधन के रूप में अपनाकर मोक्ष गामी हो सकते हैं। यदि राजा बनने के बाद भी उसका यह पक्षपाती व्यवहार रहा तो वह अपनी अवनति स्वयं कर लेता है। अतः राजा को चाहिए कि उसके लिए कोई विशेष नहीं कोई सामान्य नहीं। इतना अवश्य है कि धार्मिक विद्वान जनों की सहायता उन्नति सदा करता रहे और दुष्टों का दलन हमेशा करता रहे, तभी वह राजा राजनीति को साधन के रूप में अपनाकर मोक्ष गामी हो सकते हैं।

राजनीति एक दराती के समान है चाहे तो इसका सदुपयोग करके फसल काटने के कार्य में लगा लें अथवा किसी की गर्दन काटने में प्रयोग कर लें। राजनीति एक उत्तम मार्ग है इसका प्रयोग ऋषियों आचार्यों के मार्गदर्शन में बड़े सावधानी पूर्वक संपन्न करते हुए हम मोक्ष को प्राप्त करें।

संध्या काल

मार्गशीर्ष-मास, हेमन्त-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076	पौष-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(13 नवम्बर 2019 से 12 दिसम्बर 2019)	(13 दिसम्बर 2019 से 10 जनवरी 2020)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)	प्रातः कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)	सांय कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

क्योंकि जो राजा आदि अल्पज्ञ मनुष्यों से डरता, और परमेश्वर से भय नहीं करता, वह क्योंकर धर्मात्मा हो सकता है? क्योंकि राजा आदि के सामने बाहर की अधर्मयुक्त चेष्टा करने में तो भय होता है, परन्तु आत्मा और मन में बुरी चेष्टा करने में कुछ भी भय नहीं होता, क्योंकि ये भीतर का कार्म नहीं जान सकते। इससे आत्मा और मन का नियम करनेहारा राजा एक आत्मा और दूसरा राजा परमेश्वर ही है, मनुष्य नहीं। और वे जहाँ एकान्त में राजादि मनुष्यों को नहीं देखते, वहाँ तो बाहर से भी चोरी आदि दुष्ट कर्म करने में कुछ भी शंका नहीं करते।

दृष्टान्त- जैसे एक धार्मिक विद्वान् के पास पढ़ने के लिए दो नवीन विद्यार्थियों ने आके कहा कि-"आप हमको पढ़ाए।"

विद्वान्-अच्छा हम तुमको पढ़ावेंगे। परन्तु हम कहें सो एक काम तुम दोनों जने कर लाओ। इस एक-एक लड़के को एकान्त में ले जाके, जहां कोई भी न देखता हो, वहां इसका कान पकड़कर दो-चार बार शीघ्र-शीघ्र उठा-बैठा के धीरे से एक चपेटिका मार देना। दोनों दोनों को लेके-चले। एक ने तो चारों ओर देखा कि यहाँ कोई नहीं देखता। उक्त काम करके झट चला आया। दूसरा पण्डित के वचन के अभिप्राय को विचारने लगा कि-'मुझको लड़का और मैं लड़के को भी देखता ही हूँ, फिर वह काम कैसे कर सकता हूं' ? पण्डित के पास आया।

तब जो प्रथम आया था, उससे पण्डित ने पूछा कि जो हमने कहा था सो तू कर आया? उसने कहा-'हाँ'। दूसरे को पूछा कि- तू भी कर आया वा नहीं? उसने कहा-"नहीं, क्योंकि आपने मुझको ऐसा कहा था कि जहाँ कोई न देखता हो वहाँ यह काम करना, सो ऐसा स्थान मुझको कहीं भी नहीं मिल सकता। प्रथम तो मैं इस लड़के को और लड़का मुझको देखता ही था।" पण्डित ने कहा कि-"तू बुद्धिमान् और धार्मिक है, मुझसे पढ़। दूसरे से कहा कि-'तू पढ़ने के योग्य नहीं है, यहाँ से चला जा।"

वैसे ही क्या कोई भी स्थान वा कर्म है कि जिसको आत्मा और परमात्मा न देखता हो? जो मनुष्य इस प्रकार आत्मा और परमात्मा की साक्षी से अनुकूल कर्म करते हैं, वैसे ही 'धर्मात्मा' कहते हैं।

(प्र०) सब मनुष्यों का विद्वान् वा धर्मात्मा होने का सम्भव है वा नहीं ?

(उ०) विद्वान् होने का तो सम्भव नहीं, परन्तु जो धर्मात्मा हुआ चाहें, तो सभी हो सकते हैं। अविद्वान् लोग दूसरों को धर्म का निश्चय नहीं करा सकते। और विद्वान् लोग धार्मिक होकर अनेक मनुष्यों को भी धार्मिक कर सकते हैं? और कोई धूर्त मनुष्य अविद्वान् को बहका के अधर्म में प्रवृत्त कर सकता है, परन्तु विद्वान् को अधर्म में कभी नहीं चला सकता। क्योंकि जैसे देखता हुआ मनुष्य कुएँ में कभी नहीं गिरता, परन्तु अन्धे को तो गिरने का सम्भव है, वैसे विद्वान् सत्यासत्य को जानके उसमें निश्चिय रह सकते, और अविद्वान् ठीक-ठीक स्थिर नहीं रह सकते।

[मूर्ख राजा का दृष्टान्त]

दृष्टान्त- जैसे एक कोई अविद्वान् राजा था। उसके राज्य में किसी ग्राम में कोई मूर्ख भिक्षुक ब्राह्मण था। उसकी स्त्री ने कहा कि आजकल भोजन भी नहीं मिलता, बहुत कष्ट है। तुम पहले दानाध्यक्ष के पास जाना। वह राजा के पास ले जाके कुछ जप-अनुष्ठान लगवा देगा। उसने वैसा ही किया। जब उसने दानाध्यक्ष के पास जाके अपना हाल कहा कि आप मेरी कुछ जीविका करा दीजिए। **दानाध्यक्ष**-मुझको क्या देगा? **अर्थी**-जो तुम कहो। **दानाध्यक्ष**-अर्धमर्धं स्वाहा। **अर्थी**-महाराज! मैं नहीं समझा, तुमने क्या कहा? **दानाध्यक्ष**-जो तू आधा हमको दे और आधा तू ले तो, तेरी जीविका लगा दें। **स्वार्थी**-जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। **दानाध्यक्ष-** अच्छा तो चल राजा के पास। **स्वार्थी**-चलो।

खुशामदियों से सभा भरी थी। वहाँ दानों पहुँचे। दानाध्यक्ष ने कहा कि-यह गो ब्राह्मण है। इसकी कुछ जीविका कर दीजिए। यह आपका जप-अनुष्ठान किया करेगा। **राजा**-अच्छा जो आप कहें। **दानाध्यक्ष**-दस रुपये मासिक होने चाहिएँ। **राजा**-अच्छा अच्छा। **दानाध्यक्ष**-छह महीने का प्रथम मिलना चाहिये। **राजा**-अच्छा, कोषाध्यक्ष! इसको छह महीने का जोड़कर दे दो। **कोषाध्यक्ष**-जो आज्ञा।

जब स्वार्थी रुपये लेने को गया, तब **कोषाध्यक्ष** बोले-मुझको क्या देगा? **स्वार्थी**-आप भी एक-दो ले लीजिए। कोषाध्यक्ष-छी छी! दश रुपये से कम हम नहीं लेंगे, नहीं तो आज रुपये न मिलेंगे फिर आना। तब तक दानाभक्ष ने एक नौकर भेज दिया कि-उसको हमारे पास ले-आओ, तब एक कोषाध्यक्षजी ने भी दस रुपये उड़ा लिये।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका

पर जाएं।

14 अक्टूबर-12 नवम्बर 2019 **कार्तिक** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
रेवती कृष्ण प्रतिपदा 14 अक्टूबर	अश्विनी कृष्ण द्वितीया 15 अक्टूबर	भरणी कृष्ण तृतीया 16 अक्टूबर	कृतिका कृष्ण तृतीया 17 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण चतुर्थी 18 अक्टूबर	मृगशिरा कृष्ण पंचमी 19 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण षष्ठी 20 अक्टूबर
पुनर्वसु कृष्ण सप्तमी/अष्टमी 21 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण नवमी 22 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण दशमी 23 अक्टूबर	मघा कृष्ण एकादशी 24 अक्टूबर	पू० फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 25 अक्टूबर	उ० फाल्गुनी/हस्त कृष्ण त्रयोदशी 26 अक्टूबर	चित्रा कृष्ण चतुर्दशी 27 अक्टूबर
स्वाती कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 28 अक्टूबर	विशाखा शुक्ल द्वितीया 29 अक्टूबर	अनुराधा शुक्ल तृतीया 30 अक्टूबर	ज्येष्ठा शुक्ल चतुर्थी 31 अक्टूबर	मूल शुक्ल पंचमी 1 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 2 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल सप्तमी 3 नवम्बर
श्रवण शुक्ल अष्टमी 4 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल नवमी 5 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल नवमी 6 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल दशमी 7 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल एकादशी 8 नवम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 9 नवम्बर	रेवती शुक्ल त्रयोदशी 10 नवम्बर
अश्विनी चतुर्दशी 11 नवम्बर	भरणी शुक्ल पूर्णिमा 12 नवम्बर			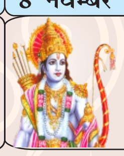 दीपावली पर्व व ऋषि बलिदान दिवस 27 अक्टूबर		

13 नवम्बर-12 दिसम्बर 2019 **मार्गशीर्ष** ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		कृतिका कृष्ण प्रतिपदा 13 नवम्बर	रोहिणी कृष्ण द्वितीया 14 नवम्बर	मृगशिरा कृष्ण तृतीया 15 नवम्बर	आर्द्रा कृष्ण चतुर्थी 16 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण पंचमी 17 नवम्बर
पुष्य कृष्ण षष्ठी 18 नवम्बर	आश्लेषा कृष्ण सप्तमी 19 नवम्बर	मघा कृष्ण अष्टमी 20 नवम्बर	पू० फाल्गुनी कृष्ण नवमी 21 नवम्बर	उ० फाल्गुनी कृष्ण दशमी/एकादशी 22 नवम्बर	हस्त कृष्ण द्वादशी 23 नवम्बर	चित्रा कृष्ण त्रयोदशी 24 नवम्बर
स्वाती कृष्ण चतुर्दशी 25 नवम्बर	विशाखा कृष्ण अमावस्या 26 नवम्बर	अनुराधा कृष्ण प्रतिपदा 27 नवम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल द्वितीया 28 नवम्बर	मूल शुक्ल तृतीया 29 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 30 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल पंचमी 1 दिसम्बर
श्रवण शुक्ल षष्ठी 2 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल सप्तमी 3 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल अष्टमी 4 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल नवमी 5 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल दशमी 6 दिसम्बर	रेवती शुक्ल एकादशी 7 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल एकादशी 8 दिसम्बर
भरणी शुक्ल द्वादशी 9 दिसम्बर	कृतिका शुक्ल त्रयोदशी 10 दिसम्बर	रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 11 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल पूर्णिमा 12 दिसम्बर			

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

He was accorded a very cordial reception by Maharana Sajjan Singh. After a short stay, he proceeded to Udaypore, the capital of the State. His Highness called on Swamiji morning and evening, in the morning generally accompanying him in his walk, and in the evening studying with him. Swamiji instructed the Maharana in Darshans, Manusmriti and Mahabharata in the presence of his trusted chiefs. He also initiated the Maharana into upasana. The result of all this was that before long, the Maharana was a different man, and began to lead a regular, dutiful and disciplined life. One great reform which was introduced in the Mewar State at the instance of Swamiji was the introduction and use if Hindi as a court language. Swamiji also wished to establish a Vedic Pathshala with a view to giving some permanency to the interests of Arya Samaj. He also conceived the idea of opening a school or college for training the children of the nobility of Vedic lines on the part of Government. It is unfortunate that the scheme did not materialize.

It will not be out of place to give an incident relating to Swamiji's stay at Udaipur, which shows how unbending he was in his devotion to principles. It is said, that the Maharana in the course of his talk suggested to Swamiji to give up denouncing idol-worshp as a matter of policy.

"Your Holiness known that this state this state is spiritually subject to the Linga Ishwara Mahadeva. In case you follow my suggestion, I shall give you the Mahantship of the Mandir which will bring you an annual income of lacs of rupees."

"Neither this petty state nor your petty mandir has power to deviate me from what I consider my duty."

The Maharana was perhaps prepared for this reply, for he hastened to remark.

“Revered sir, I was only trying you."Swamiji brought about a transformation in the life of Ranaji. To quote Pandya Mohan lal Vishun Lal "The Maharaja, through the upadesha (sermons) of Swamiji, was a completely regenerated man' Ranaji was ever ready to carry out Swamiji's behests, but the latter took good care not to interfere in the internal administration of the State. That added to Maharana's respect for him; as a matter of fact His Highness respected and revered Swamiji as he really respected and revered no one before. When receiving upadesha he would insist on occupying a seat much lower than that of the Swami, but the latter would not permit this, saying, "If I don't show respect to your Highness, how can your subjects respect you as they should ?"

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

अब से पहले काफी संशयपूर्ण जीवन जीता था। यहाँ आने व 2 दिन यहाँ बिताने के बाद मानसिक संशय दूर हो गए। ईश्वर, धर्म, राष्ट्र, कर्तव्य, लक्ष्य आदि के अर्थ व जीवन में इनका क्या महत्व व स्थान है, ये मैं जान गया हूँ। मैं काफी दिनों से मानसिक तौर पर भटक रहा था। कभी विपश्यना में 10 दिन तो कभी आर.एस.एस. का 7 दिन का सत्र किया। लेकिन मन को फील नहीं हुआ कि मेरी खोज खत्म हुई। आज ऐसी फीलिंग आ रही है जैसे खोज खत्म हुई लक्ष्य मिला।

मैं लोगों में प्रचारक बनूगां। कुछ आर्थिक मदद भी करूँगा। खुद को श्रेष्ठ आर्य साबित करूँगा। और सतत् प्रयास करूँगा कि लोगों को श्रेष्ट आर्य बनवाने में सहायता कर सकूँ।

नाम : महावीर नागर, आयु : 31 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः स्वयंकार्य, पता : फरीदाबाद, हरियाणा।

मुझे सत्र से बहुत कुछ ऐसा जानने को मिला जिनके लिए पहले मेरी धारणा कुछ और थी। सत्र सुनने के बाद बहुत से विचारों व धारणाओं में परिवर्तन आया है। सत्र में बहुत सी ज्ञानवर्धक बातें बताई गई जिन्हे मैंने दिमाग में भी बिठाया एवं अपनी पुस्तिका में भी उतार लिया है। उपासना व आसन के नियमों के बारे में जानकर भी बहुत कुछ समझ आया है। क्योंकि सत्र पहली बार किया है इसलिए अभी मन में बहुत से सवाल हैं जिनके लिए में आशा करती हूँ कि मुझे उनके जवाब मिलेंगे।

नाम : अंजली भारद्वाज, आयु : 26 वर्ष, योग्यता : बी.टेक, पता : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

ये दो दिवसीय सत्र मुझे बहुत ही ज्ञानवर्धक लगा। इस दो दिवसीय सत्र में मैंने जाना कि ईश्वर क्या है? वेद क्या है? उपासना कैसे की जाती है? वैदिक यज्ञ किस तरह से किया जाता है? आचार्या इन्द्रा जी ने इन सभी को बडे ही सरल तरीके से और विभिन्न उदाहरणों के द्वारा समझाया। मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूँ जो मैंने उनके सम्पर्क में आकर कुछ सीखा। मैं उनका बहुत आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने मेरा मार्ग दर्शन किया।

मैंने बहुत से छात्र/छात्राओं और परिवार के साथ सम्पर्क बनाया और इस प्रशिक्षण में आने का आग्रह किया।

नाम : राजकुमारी यादव, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्यः नौकरी, पता : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

सत्र में हमें राष्ट्र निर्माण के प्रति अति उत्साह मिला। हम जाति-पाती को मिटाकर एक आयोवर्त देश का निर्माण करूगाँ। हमें आपस में मिलकर के देश के शत्रुओं से लड़ना है। हम आर्यों की संन्तान हैं, हम पहले विश्वगुरु थे। हम 1000 साल तक गुलाम रहे हमारी मानसिक गुलामी भी हो गई है। इस मानसिकता को छोड़कर तथा जाति-पाती को मिटाकर हमें वेद को पढ़ना है, पढ़ाना है तथा भारत को वेद के सिद्धान्त पर फिर खड़ा करना है। देश को फिर से हम बटने, टूटने नहीं देंगे।

नाम : मुकेश कुमार आर्य, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्यः रेलवे, पता : नारसिंहपुर, गया, बिहार।

वैदिक विचारों को सरलता से समझाया। वेदों के महत्व को समझाया। वेदों से पाखण्ड का खण्डन किया। वेदों से राष्ट्र निर्माण का मार्ग बताया। विचार और बुद्धि के मूल को समझाया। पूरी सतर्कता और गंभीरता से वैदिक मूल्यों को ग्रहण किया। अपने सामर्थ्य अनुसार इन मूल्यों का पालन करुंगा। किसी भविष्य के कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति और सामर्थ्य अनुसार सेवा के लिये प्रतिबद्ध।

नाम : अभिषेक , आयु : 25 वर्ष, योग्यता :बी.ई., कार्यः इंजीनियर, पता : गुरुग्राम, हरियाणा

मेरा अनुभव यह रहा कि पहले मुझे (मैं) बहुत गलत सोचता था (आर्यो के बारे में)। पर मेरे इस सत्र के बाद मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। पहले मैं मूर्ति-पूजन में विश्वास करता था पर अब पता लगा भगवान मूर्तियों में नहीं है वो तो सभी जगह है। भगवान हमारे किये गए सभी कार्यों को देखता है।

मैं अपना पूरा सहयोग इस (अपने राष्ट्र) आर्य निर्माण में दूंगा। मैं आर्य औमदत्त हमेशा आर्य निर्माण के लिए तत्पर रहूँगा। धन्यवाद!

नाम : औमदत्त, आयु : 19 वर्ष, योग्यता : बारवीं, कार्यः अध्ययन, पता : झज्जर, हरियाणा।

इस दो दिन के सत्र में शामिल होकर बहुत अच्छा लगा और बहुत कुछ सीखा। ईश्वर, धर्म, वेदों का ज्ञान राष्ट्र के प्रति समर्पित, अपने आप को पहचानना आदि चीजों के बारे में सटीक जानकारी पाई। मूर्ति का विरोध और आज के अंधविश्वासों के बारे में काफी जानकारी पाई। पाखण्डी लोग किस तरह हमें मूर्ख बना रहे थे ये भी सिखा। हमने अपने पूवजों को मिटाया और यह भी जाना कि हमारी पीढ़ियों के साथ किस तरह अत्याचार हुआ। आर्या निर्माण कार्य में जितना हो सकेगा मैं कोशिश अवश्य करूंगा।

नाम : अभय आनन्द, आयु : 26 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः अध्ययन, पता : गया, बिहार।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	12 नवम्बर	दिन-मंगलवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-भरणी
अमावस्या	26 नवम्बर	दिन-मंगलवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-विशाखा
पूर्णिमा	12 दिसम्बर	दिन-गुरुवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-मृगशिरा
अमावस्या	26 दिसम्बर	दिन-गुरुवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मूल

आर्या गृरुकुल में आर्याओं की सन्ध्या व यज्ञ प्रशिक्षण कक्षा

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।